UP Board Class 8 History Notes Chapter 2 भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना

व्यापार से युद्धों तक :- अठारहवीं सदी की शुरुआत में कंपनी और बंगाल के नवाबों का टकराव काफी बढ़ गया था। ऐसे में बंगाल के नवाब अपनी ताकत दिखाने लगे थे। मुर्शिद कुली खान के बाद अली वर्दी खान और उसके बाद सिराजुद्दोला बंगाल के नवाब बने। ये सभी शक्तिशाली शासक थे। उन्होंने कंपनी को रियायतें देने से मना कर दिया। व्यापार का अधिकार देने के बदले कंपनी से नज़राने माँगे , किलेबन्दी को बढ़ाने से रोका , सिक्के ढालने का अधिकार नही दिया। ये टकराव दिनोदिन गंभीर होते गए। अंत: इन टकरावों की परिणति प्लासी के प्रसिद्ध युद्ध के रूप में हुई।

प्लासी का युद्ध :- 1756 मे अली वर्दी खान की मृत्यु के बाद सिराजुद्दोला बंगाल के नवाब बने। कंपनी को सिराजुद्दोला की ताकत से काफ़ी भय था। सिराजुद्दोला की जगह कंपनी एक ऐसा कठपुतली नवाब चाहती थी जो उसे व्यापारिक रियायते और अन्य सुविधाएँ आसानी से देने में आनाकानी न करें

कंपनी ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दोला के प्रतिद्वंद्वीयों में से किसी को नवाब बना दिया जाए । जवाब में सिराजुद्दोला हुक्म दिया कि कंपनी उनके राज्य में के राजनीतिक मामलों में टाँग अड़ाना बंद कर दे , किलेबंदी रोके , और बाकायदा राजस्व चुकाए । दोनों के बीच मतभेद के कारण **1757 में रॉबर्ट क्लाइव और सिराजुद्दोला के बीच प्लासी का युद्ध हुआ।** जिसमें सिराजुद्दोला की हार का एक बड़ा कारण उसके सेनापतियों में से एक सेनापति मीर जाफ़र की कारगुजारियाँ भी थी।

प्लासी की जंग इसलिए महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि भारत में यह कंपनी की पहली बड़ी जीत थी।

1764 बक्सर का युद्ध :- बंगाल के नवाब मीर जाफ़र को बनाया गया जब मीर जाफ़र ने कंपनी का विरोध किया तो कंपनी ने उसे हटकर मीर कासिम को नवाब बना दिया। जब मीर कासिम परेशान करने लगा तो 1764 बक्सर का युद्ध में उसको भी हराना पड़ा। फिर मीर जाफ़र को नवाब बनाया लेकिन जब मीर जाफ़र की मृत्यु के बाद रॉबर्ट क्लाइव ने ऐलान किया कि अब " हम खुद ही नवाब बनना पड़ेगा।

आखिरकार 1765 में मुग़ल सम्राट ने कंपनी को ही बंगाल प्रांत के दीवान नियुक्त कर दिया , दीवानी मिलने के कारण कंपनी को बंगाल के विशाल राजस्व संसाधनों पर नियंत्रण मिल गया था।

कंपनी के अफ़सर ' नवाब ' बन बैठे :

कंपनी के पास अब सत्ता और ताकत थी।कंपनी का हर कर्मचारी नवाबों की तरह जीने के ख्वाब देखने लगा था। प्लासी के युद्ध के बाद कंपनी को निजी तोहफे के तौर पर जमीन और बहुत सारा पैसा मिला। खुद रॉबर्ट क्लाइव ने ही भारत से बेहिसाब दौलत जमा कर ली।

1743 में जब वह इंग्लैंड से मद्रास (अब चैन्नई) आया था तो उसकी उम्र 18 साल थी। 1767 में जब वह दो बार गवर्नर बनने के बाद हमेशा के लिए भारत से रवाना हुआ तो यहाँ उसकी दौलत 401,102 पौंड के बराबर थी। 1772 में ब्रिटिश संसद में उसे खुद भ्रष्टाचार के आरोपों पर अपनी सफ़ाई देनी पड़ी। सरकार को उसकी अकूत संपत्ति के स्रोत संदेहास्पद लग रहे थे। उसे भ्रष्टाचार आरोपों से बरी तो कर दिया गया लेकिन 1774 में उसने आत्महत्या कर ली।

कंपनी का फैलता शासन :- बक्सर की लड़ाई (1764) के बाद कंपनी ने भारतीय रियासतों में रिजिडेंट तैनात कर दिये।ये कंपनी के राजनितिक या व्यावसायिक प्रतिनिधि होते थे। उनका काम कंपनी के हितों की रक्षा करना और उन्हें आगे बढ़ाना था।

" सहायक संधि " :- जो रियासत इस बंदोबस्त को मन लेती थी उसे अपनी स्वतंत्र सेनाएँ रखने का अधिकार नहीं रहता था। उसे कंपनी की तरफ से सुरक्षा मिलती थी और " सहायक सेना " के रखरखाव के लिए वः कंपनी को पैसा देती थी।

https://www.evidyarthi.in/